ख़ास ख़ोज-ख़बर

उत्तर ट्रियासिक युग में डायनासोर तो थे, लेकिन बारिश के माहौल में वे फल फूल नहीं सके थे

डायनासोर के पहले ऐसा क्या होता रहा जिससे वे नहीं पनप सके? उस दौर के बाद ही आ सका उनका युग

● मंथन विदेश ब्यूरो

न्यूज डेस्क। पृथ्वी से महाविनाशों पर बहुत शोध हुए हैं। इसमें भी सबसे ज्यादा डायनासोर के महाविनाश के युग के हुए हैं। पर नई रिसर्च में शोधकर्ताओं ने डायनासोर के पहले के दौर के महाविनाश की नई जानकारी निकाली है जिसके बाद ही डायनासोर के पनप सके और वे पूरी धरती पर राज करने वाले जानवर बन गए। शोधकर्ताओं ने बताया कि उस दौर में दस लाख साल तक लगातार बारिश हुई थी जिसमें बहुत से जानवर तो विलुप्त ही हो गए थे, लेकिन डायनासोर उस दौर के बाद ही फल फूल सके थे।

वो दस लाख साल का दौर: वैज्ञानिकों की एक अंतरराष्ट्रीय टीम ने सीपीई नाम की बारिश की अवधि के बाद एक प्रमुख महाविनाश घटना के प्रमाणों की खोज की है, जो दस लाख तक चली। शोधकर्ताओं के अनुसार, इस महाविनाश की घटना के कारण ही डायनासोर पृथ्वी पर प्रमुख जीव के रूप में उभरे।

कार्नियन प्लूवियल एपिसोड क्या था?

लेट ट्राइसिक काल में, महाद्वीप एक दूसरे से जुड़कर पैंजिया नामक एक सुपरकॉन्टिनेंट में बदल गए थे, जो

पंथालासा महासागर से घिरा हुआ था। पैंजिया का आंतरिक हिस्सा सूखा और बंजर था और तटीय क्षेत्रों के करीब ही बारिश होती थी। इस सूखे दौर की कहानी में एक नाटकीय मोड़ तब आया जब भूविज्ञानी श्लेगर और शोलनबर्गर ने 1970 के दशक में ऑस्ट्रेलिया के उत्तरी चूना पत्थर आल्प्स में गहरे भूरे रंग की चट्टान की एक परत पाई। इस परत ने शुष्क अवधियों के बीच गीली स्थितियों के होने का संकेत दिया, जो कार्नियन प्लूवियल एपिसोड की घटना का संकेत देता है। हैरानी की बात ये है कि उस समय कमजोर होने के बाद भी डायनासोर खत्म नहीं हुए थे।

कहां मिले इस घटना के संकेत

रैंगेलिया प्रांत एक ऐसा इलाका है जिसमें अलास्का और ब्रिटिश कोलंबिया के कुछ हिस्से शामिल थे। माना जाता है कि इसमें हुए बड़े पैमाने पर ज्वालामुखी विस्फोट जलवायु परिवर्तन का कारण बने। इन विस्फोटों की वजह से भारी मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड निकल कर वायुमंडल में पहुंच गया था। इससे कई तरह के बदलावों का सिलसिला चल निकला जो कई तरह के जीवों के लिए विनाशकारी साबित हुआ।

फिर हुआ जलवायु परिवर्तन

डॉ. जैकोपो डाल कोर्सो ने बताया, 'कार्नियन में विस्फोट चरम पर थे। वे इतने विशाल थे कि उन्होंने कार्बन डाइऑक्साइड जैसी ग्रीनहाउस गैसों की भारी मात्रा को बाहर निकाला, जिससे ग्लोबल वार्मिंग में खासा इजाफा हो गया।' ग्रीनहाउस गैसों में वृद्धि के कारण, वैश्विक तापमान में पांच से सात डिग्री फ़ारेनहाइट का इजाफा हो गया, जिसके कारण समुद्रों से वाष्पीकरण बढ़ गया और पृथ्वी पर बारिश में इजाफा हो गया। इतना नही ही आलम यह हो गया कि बारिश का बहुत ही लंबा दौर चल निकला।

सूरज में नासा ने ढूंढे दो छेद

सूर्य में हुआ पृथ्वी से बीस गुना बड़ा छेद, निगल चुका है अंतरिक्ष के कई तारे, अब धरती को पहुंचा सकता है बड़ा नुकसान!

● मंथन विदेश ब्यूरो

न्यूज डेस्क। स्पेस में कई तारे और ग्रह मौजूद हैं। हर एक सेकंड स्पेस में कोई ना कोई गतिविधि होती ही रहती है। इसमें से कुछ तो नोटिस में भी नहीं आ पाती। लेकिन ऐसी कुछ घटनाएं हो जाती हैं, जो सीधे-सीधे धरती को प्रभावित करने में सक्षम होती हैं। ब्लैक होल से लेकर ओजोन लेयर डिप्लीशन ऐसे ही कुछ उदाहरण हैं। इनके जरिये पृथ्वी को भी नुकसान होता है। हाल ही में एक्सपर्ट्स ने खुलासा किया है कि पृथ्वी से बीस गुना बड़ा छेद सूरज में हो गया है सूरज में हुए इस बड़े से छेद की वजह से धरती को आने वाले हफ्ते में काफी नुकसान हो सकता है। इस छेद से 1.8 मिलियन एमपीएच की स्पीड से तूफान जैसी हवाएं निकल रही है। ये हवाएं जल्द धरती को नुकसान पहुंचा सकती है। इस छेद को, जिसे कोरोनल होल कहा जा रहा है, धरती से बीस गुना बड़ा है। ये सूरज में हुआ अभी तक का दूसरा सबसे बड़ा छेद है। एक्सपर्ट्स के मुताबिक, अगले 24 घंटे में इसकी हवाएं पृथ्वी तक पहुंच सकती है। साइंटिस्ट्स के मुताबिक, इससे धरती के मैग्नेटिक फील्ड, सैटेलाइट्स और तकनीक पर असर पड़ेगा।

हो सकता है पावर कटः अगर साइंटिस्ट्स की बात पर यकीन करें, तो अगले चौबीस घंटे में धरती के कई इलाकों में पावर कट हो सकता है। सूरज पर अभी तक दो छेद एक्सपर्ट्स में ढूंढे हैं। इसमें से एक पृथ्वी से तीस गुना बड़ा है। इसकी वजह से अमेरिका के एरिजोना में रात को

आसमान में पर्पल और हरी रोशनी देखने को मिली थी। इसकी वजह से सोलर जी3 स्टॉर्म आया था। इससे कई स्पेसक्राफ्ट ऑपरेशन प्रभावित हुए थे।अब जो दूसरा छेद मिला है, वो पृथ्वी से बीस गुना ज्यादा बड़ा है।

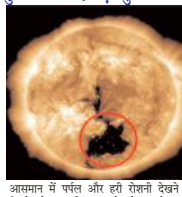

सूरज की हवाएं आ सकती है पृथ्वी तक

नासा ने ढूंढे दोनों छेदः ये दोनों ही छेद नासा के सोलर डाइनेमिक ओब्सर्वेटरी ने ढूंढे। इनका काम सूरज को स्टडी करना है। ये पोल्स के नजदीक हैं और यही से सूरज की ज्यादातर एक्टिविटी ट्रेस की जाती है। जिस जगह पर ये छेद मिले हैं, वहां का तापमान थोड़ा कम होता है। लेकिन दूसरा छेद सूरज के इक्वेटर में है। एक्सपर्ट्स ने इस हफ्ते के अंत तक छेद का प्रभाव पृथ्वी पर पढ़ने का अंदेशा जताया है। कुछ का कहना है कि सूरज की तेज हवाएं धरती तक आएंगी, जिससे धरती को नुकसान पहुंच सकता है।

स्पेशल ख़बर

अंग्रेजों का बनवाया मंदिर शायद ही कहीं दिखे

इस शिव मंदिर का अंग्रेज ने कराया था पुनर्निर्माण 1880 में 15,000 रुपये दान किए थे

● मंथन खोजी संवाददाता

नई दिल्ली। आपको अंग्रेजों का बनवाया मंदिर शायद ही कहीं दिखे। हालांकि अंग्रेजों ने एक शिव मंदिर की मरम्मत कराकर उसकी काया बदल दी थी। यह मंदिर आज भी मध्यप्रदेश के मालवा में मौजूद है। अंग्रेजों के शासनकाल में भारत में पुनर्स्थापित किया गया यह इकलौता हिंदू मंदिर है।

लेफ्टिनेंट कर्नल मार्टिन ने साल 1880 में मालवा स्थित हिंदू मंदिर का पुनर्निर्माण कराया था। भगवान शिव ने अफगान युद्ध में उनकी जान बचाई थी। इसके बाद ही वो भोलेनाथ के बड़े भक्त बन गए थे। दरअसल अफगान युद्ध में फंसने के बाद कर्नल मार्टिन लगातार अपनी पत्नी को पत्र लिखकर हालात का जायजा देते रहते थे। युद्ध लंबा चल रहा था और अचानक ही कर्नल मार्टिन की पत्नी को उनके पत्र मिलने बंद हो गए। पति के खत न मिलने पर मालवा में बैठी उनकी पत्नी की चिंता लगातार बढ़ रही थी।

मन की शांति के लिए मिसेज मार्टिन घुड़सवारी करने लगीं। एक दिन वो बैजनाथ मंदिर के पास से गुजर रही थीं। इस समय मंदिर की हालत जर्जर थी, पर आरती का समय था और चारों ओर शंख की आवाज और मंत्रों का जाप गूंज रहा था। ये नजारा देख मिसेज मार्टिन भगवान शिव की पूजा देखने के लिए वो मंदिर में चली गईं। मंदिर के पुजारी मिसेज मार्टिन की चिंता पकड़ ली और बड़ी विनम्रता से पूछा, 'आपके साथ क्या बुरा हुआ है? मिसेज मार्टिन पुजारी को अपनी कहानी बताई तो पुजारी ने कहा कि भगवान शिव किसी को निराश नहीं करते। पुजारी ने उन्हें 11 दिनों तक ओम नमः शिवाय मंत्र का जाप करने की सलाह दी। मिसेज मार्टिन ने भगवान शिव से अपने पति के सही-सलामत वापस लौटने की दुआ मांगी और कहा कि अगर उनके पति अफगान युद्ध से सुरक्षित वापस लौटे तो वो इस मंदिर को रेनोवेट करवाएंगी। 10 दिन बाद कर्नल मार्टिन का खत उनकी पत्नी को मिला। पत्र में लिखा था, युद्ध के दौरान मैं तुम्हें लगातार पत्र लिख रहा था, लेकिन पठानों की सेना ने हमें अचानक से घेर लिया था। मुझे लगा हमारे पास बच निकलने का अब कोई मौका नहीं रह गया है। लेकिन इस रणभूमि में मैंने अपनी आंखों से एक चमत्कार होते हुए देखा है। ये संदेश पढ़ते ही मिसेज मार्टिन की आंखों से खुशी के आंसू छलक उठे। वह भगवान शिव की प्रतिमा के चरणों में लेट गई और रोने लगीं। जब कर्नल मार्टिन वापस लौटे तो उनकी पत्नी ने उन्हें पूरी कहानी सुनाई। साल 1883 में मंदिर को रेनोवेट कराने के लिए दोनों ने 15,000 रुपए दान दिए, जो उस वक्त मामूली राशि नहीं थी। यह जानकारी आज भी बैजनाथ महादेव मंदिर में रखे एक पत्थर पर लिखी हुई है।

मोहम्मद हाम्दी बोश्ता बिच्छुओं का ये जहर यूरोप और अमेरिका में सप्लाई करते हैं

बिच्छुओं से जहर बनाकर 1 ग्राम, 70 लाख में बेचता है ये शख्स

● मंथन खोजी संवाददाता

नई दिल्ली। दुनिया में कई अजीबोगरीब काम है जिसे करने का लोग शौक रखते है और इन्ही शौक को वो पैसे कमाने का जरिया भी बनाते हैं। 25 साल का एक शख्स जिनका नाम मोहम्मद हाम्दी बोश्ता है. मोहम्मद हाम्दी बोश्ता मिस्र के रहने वाले हैं। ये अजीबोगरीब शौक एक दिन उन्हें इतना अमीर और कामयाब बना देगा, ऐसा खुद उन्होंने भी नहीं सोचा होगा। एक ग्राम जहर के बदले उन्हें करीब 73 लाख रुपए (10,000) मिलते हैं।

कंपनी के मालिक

महज 25 साल की उम्र में मोहम्मद हाम्दी 'कायरो वेनोम कंपनी' के मालिक बन गए हैं. ये एक ऐसा प्रोजेक्ट है जहां अलग-अलग प्रजाति के 80,000 हजार से ज्यादा बिच्छू और सांप रखे जाते हैं। इन सांप और बिच्छुओं का जहर निकालकर दवा बनाने वाली कंपनियों को बेच दिया जाता है।

ऐसे निकाला जाता है जहर

यूवी लाइट (अल्ट्रावॉयलेट लाइट) की मदद से पकड़े बिच्छुओं का जहर निकालने के लिए हल्का सा इलेक्ट्रिक शॉक दिया जाता है। इलेक्ट्रिक शॉक लगते ही बिच्छुओं का जहर बाहर आ जाता है और उसे स्टोर कर लिया जाता है.रॉयटर्स की एक रिपोर्ट के मुताबिक, बिच्छू के एक ग्राम जहर से करीब 20,000 से 50,000 तक एंटीवेनोम (विषरोधक) डोज़ बनाए जा सकते हैं एंटीवेनोम ड्रग तैयार करते वक्त बिच्छू के जहर की क्वांटिटी में बड़ी सावधानी बरती जाती है।

यहां की जाती है जहर की सप्लाई

मोहम्मद हाम्दी बोश्ता बिच्छुओं का ये जहर यूरोप और अमेरिका में सप्लाई करते हैं, जहां इनका इस्तेमाल एंटीवेनम डोज़ और हाइपरटेंशन जैसी तमाम बीमारियों की दवाइयां बनाने में किया

---मंथन दृष्टि विज्ञापन दरें---

फुल पेज ब्लैक एण्ड व्हाइट	=	38000 रूपए
फुल पेज कलर	=	60,000 रूपए
हॉफ पेज ब्लैक एण्ड व्हाइट	=	19,000 रूपए
हॉफ पेज कलर	=	30,000 रूपए
क्वार्टर पेज ब्लैक एण्ड व्हाइट	=	10,000 रूपए
क्वार्टर पेज कलर	=	15,000 रूपए

नोट : 1. ब्लैक एण्ड व्हाइट विज्ञापन का भुगतान 42 रूपए प्रति वर्गसेमी की दर से रहेगा।
2. कलर विज्ञापन का भुगतान 65 रूपए प्रति वर्गसेमी की दर से रहेगा।

ख़ास साप्ताहिक फ़ोटो

हाट कालिका महाशक्ति पीठ, यहां पर मां काली खुद प्रकट हुई थीं

बोलती तस्वीर पौराणिक दृष्टि से हाट कालिका महाशक्ति पीठ काफी महत्वपूर्ण है। युद्ध या मिशन में जाने से पहले इस मंदिर के दर्शन करते हैं जवान, यहां पर मां काली खुद प्रकट हुई थी। यह मंदिर पिथौरागढ़ के गंगोलीहाट में स्थित है। स्कंदपुराण के मानस खंड में यहां स्थित देवी का वर्णन मिलता है। यहां पर मां काली विश्राम करती है। शक्तिपीठ के पास महाकाली का बिस्तर लगाया जाता है। बताया जाता है कि सुबह में इस बिस्तर पर सिलवटें पड़ी होती हैं, जो संकेत देती है कि यहां पर किसी ने विश्राम किया है। बताया जाता है कि जो भी महाकाली के चरणों में श्रद्धापुष्प अर्पित करता है वह रोग, शोक और दरिद्रता से दूर हो जाता है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक डॉ. रजत सक्सेना द्वारा जेयन ऑफसेट वर्क्स, 119, पुल बोगदा, भोपाल (म.प्र.)-462023 से मुद्रित एवं म.न. 31, सेक्टर-1, शक्तिनगर, भोपाल, मध्यप्रदेश-462024 से प्रकाशित। प्रधान संपादक डॉ. रजत सक्सेना, संपादक- महेश प्रताप जड़िया, सभी विवादों का न्यायक्षेत्र भोपाल न्यायालय रहेगा।